व्यक्तित्व विकास को प्रभावित करने वाले कारक

डॉ फतेह बहादुर सिंह यादव
एसो. प्रो. बी.एड विभाग
चौ. चरण सिंह पी.जी. कॉलेज, हेंवरा, इटावा (उत्तर प्रदेश)

सार

प्रत्येक व्यक्ति में कुछ ऐसेगुण या विशेषताएं होती है जो दूसरे व्यक्ति में नहीं होतीं। इन्हीं गुणों एवं विशेषताओं के कारण ही प्रत्येक व्यक्ति दूसरे से भिन्न होता है। व्यक्ति के इन गुणों का संगठन ही व्यक्तित्व कहलाता है। व्यक्तित्व का अंग्रेजी रूपान्तरण पर्सनलिटी है जो लेटिन भाषा के पर्सोना शब्द से विकसित हुआ। पर्सोना का अर्थ बाह्य आवरण या मुखौटा होता है जिसको पहनकर या धारणकरकेकलाकार रूप बदलकर नाटक प्रस्तुत करते है। रोमन में विशेष गुणयुक्त पात्र को ही पर्सोना कहा जाता था। इस दूसरे अर्थ को ही आधुनिक मनोविज्ञान के पर्सनेलिटी में लिया गया है।

मुख्य शब्द, मनोविज्ञानव्यक्तित्वसमाज

प्रस्तावना

मनोवैज्ञानिकों, दार्शनिकों एवं समाज शास्त्रियों ने व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं को ध्यान में रखते हुए इसकीविभिन्न परिभाषाएं दी हैं।कैम्फ के अनुसार ''व्यक्तित्व उन प्राभ्यास संस्थाओं का या उन अभ्यास के रूपों का समन्वय है जो वातावरण में व्यक्ति के विशेष सन्तुलन को प्रस्तुत करता है।'' वारेन तथा कारमाइकल के अनुसार ''व्यक्ति के विकास की किसी अवस्था पर उसके सम्पूर्ण संगठन को व्यक्तित्व कहते है।''

मेकर्डी की परिभाषा को डा.जायसवालने इस प्रकार प्रस्तुत किया है ''व्यक्तित्व रूचियों का वह समाकलन है जो जीवन के व्यवहार में एक विशेष प्रकार की प्रवृत्ति उत्पन्न करता है।''

आलपोर्ट ने इस बात को ध्यान में रखकर अपने विचारों को व्यक्त करके व्यक्तित्व की परिभाषा को सर्वमान्य बनाने का पूर्ण एवं सफल प्रयास किया। उसकी परिभाषाएं अधिकांश मनोवैज्ञानिकों द्वारा पूर्ण परिभाषा के रूप में स्वीकार की गई है। अत: इस वर्ग की परिभाषाओं में आलपोर्ट की परिभाषा महत्वपूर्ण है।

जायसवाल के अनुसार आलपोर्ट ने व्यक्तित्व को इस प्रकार परिभाषित किया है ''व्यक्तित्व व्यक्ति की उन मनोशारीरिक पद्धतियों का वह आन्तरिक गत्यात्मक संगठन है जो कि पर्यावरण में उसके अनन्य समायोजनों को निर्धारित करता है।''

जनसाधारण में व्यक्तित्व का अर्थ व्यक्ति के बाह्य रूप एवं पहनावे से लिया जाता है, परन्तु मनोविज्ञान में व्यक्तित्व का अर्थ व्यक्ति के रूप गुणों की समष्टी से है, अर्थात् व्यक्तित्व कोबाह्य आवरण के गुण और आन्तरिक तत्व, दोनों को माना जाता है। दर्शन में व्यक्तित्व को आन्तरिक तत्व 'जीव' माना जाता है। व्यक्तित्व एक स्थिर अवस्था न होकर एक गत्यात्मक समष्टीहै जिस पर परिवेश का प्रभाव पड़ता है और इसी कारण से उसमें बदलाव आ सकता है। व्यक्तित्व विशेष लक्षणों का योग न होकर व्यक्ति के व्यवहार का समग्र गुण है।

व्यक्तित्व विकास को प्रभावित करने वाले कारक

व्यक्ति का मनोवैज्ञानिक विकास आनुवंशिकता तथा पर्यावरण **दोनो**से प्रभावित होती है। क्रो एंडक्रो का कथन है कि सामाजिक या पर्यावरणीय प्रभावों के साथ जैवकीय कारकों की अंतःक्रिया के परिणामस्वरूप व्यक्तित्व के स्वरूप का विकास होता है। इस प्रकार व्यक्तित्व के निर्धारकों को दो मुख्य वर्गों में रखा गया है–

(क) जैवकीय निर्धारक

(ख) पर्यावरण संबंधी निर्धारक

(क) जैविकीय निर्धारक

ये जन्मजात होते हैं। इसके अन्तर्गत व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाले अग्रलिखित कारक है।

1. वंशानुक्रम - व्यक्तित्व के जैविक निर्धारकों में आनुवंशिकता या वंशानुक्रमण अत्यधिक महत्वपूर्ण है। अनेक अध्ययन इस बात की पुष्टि करते हैं कि व्यक्तित्व का स्वरूप निर्धारण वंशानुक्रमण के प्रभाव से होता है। शेल्डन ने शरीर की बनावट **या रचना**और उससे सम्बन्धित स्वभाव एवं व्यवहार का जो वर्णन किया है उससे व्यक्तित्व के निर्माण में वंशानुक्रमण का महत्व स्पष्ट हो जाता है। फ्रांसिस गाल्टन ने व्यक्तियों के शरीरिक व मानसिक लक्षणों में भिन्नता का कारण वंशानुक्रमण को ही बतलाया है।
2. अंतः **स्त्रावी** ग्रंथियाँ– अंतःश्रावी ग्रन्थियाँ रासायनिक पदार्थों का जिन्हें हारमोन कहते हैं सीधे रक्तप्रवाह में विसर्जन करती है जिससे रक्त के द्वारा वे पूरे शरीर में पहुँच जाते है अंतः **स्त्रावी** ग्रन्थियों से निकले हारमोन प्रत्यक्ष रूप से शरीर की वृद्धि एवं विकास पर प्रभाव डालते हैं। गैरेट के अनुसार यह कहना है कि हम अपनी ग्रन्थियों की कठपुतली हैं सत्य नहीं है किन्तु अंतः **स्त्रावी**हारमोन निस्संदेह हमारे व्यक्तित्व के कई लक्षणों पर बहुत अधिक प्रभाव डालते हैं। एक या अधिक ग्रन्थियों के कार्य में गड़बड़ी होने पर इनका प्रभाव बड़े नाटकीय रूप में देखा जा सकता है। शरीर में अन्तः श्रावी ग्रन्थियाँ मुख्य रूप से आठ हैं।

1-पियूष ग्रंन्थि

2-थायरॉइडग्रन्थि

3-उपगल ग्रन्थियाँ

4-**लैंगरहैंस** के आइलेट

5-अधिवृक्क ग्रन्थियाँ

6 यौन ग्रन्थि **या जननग्रन्थि**

7-थाइमस ग्रन्थि और पीनियल ग्रन्थि।

इन सभी ग्रन्थियों का प्रभाव व्यक्तित्व विकास पर पड़ता है।**इन ग्रंथियों से निकलने वाले हार्मोन्स के स्त्राव का अनुपात यदि नर अथवा मादा में बिगड़ जाए तो पुरुषो में स्त्रियों जैसा तथा स्त्रियों में पुरुषो जैसा कुछ लक्षण विकसित हो जाते है अतः ऐसे व्यक्ति अंतर लिंगी कहलाते है**

3- तंत्रिका तंत्र– व्यवहार का मूल शारीरिक आधार तंत्रिका तंत्र होता है तंत्रिका तंत्र के सुचारू रूप सेकार्य करने परही व्यक्ति का मानसिक विकास तथा मानसिक क्रियाओं का संचालन निर्भर करताहै इसलिए जिसका तंत्रिका तंत्र जितना अधिक विकसित होता है उतनी हीअधिक उसमे मानसिक योग्यताओं के विकसित होने की संभावनाएं रहती है अतः वह परिस्थिति को सूक्ष्मता से समझकर उसके अनुरूप समायोजन करने में समर्थ हो जाता है तंत्रिका तंत्र के पूर्ण विकास के अभाव में व्यक्ति की शारीरिक मानसिक शक्तियों का पूर्ण विकास नहीं हो पाता, परिणमत वह अल्प बुद्धि का हो सकता है यह भी हो सकता है कि उसे व्यक्तित्व का संपूर्ण विकास ही अवरुण हो जाए

4. शारीरिक रचना एवं शारीरिक रसायन– शरीर रचना जैवकीय निर्धारण है दीर्घकाल से यह विश्वास चला आ रहा है कि प्रत्येक व्यक्ति की शरीर रचना विशेष ढंग की होती है जिसमें व्यक्तित्व के निश्चीत लक्षण पाये जाते हैं। शारीरिक रचना के अन्तर्गत शरीर के अंगों का पारस्परिक अनुपात शरीर की लम्बाई और भार नेत्रों एवम बालों का रंग तथा मुखाकृति आदि आते हैं।

शरीर में रासायनिक तत्वों की अधिकता या न्यूनता का प्रभाव व्यक्ति के व्यक्तित्व पर विशेष रूप से पड़ता है। रक्त की अधिकता व्यक्ति को आशावादी। पित्त का आधिक्य व्यक्ति को चिड़चिड़ा और कफ की अधिकता व्यक्ति को शान्त स्वभाव का बना देती है। अधिकतर रासायनिक पदार्थों का निर्माण शरीर के भीतर भोजन के आधार पर होता है। कुछ रासायनिक तत्व शरीर में बाहर से पहुँचते है जैसे– शराब गाँजा भांग इत्यादि।

5. **अन्य जैवकीय कारक**

व्यक्तित्व विकास को प्रभावित करने वाले अन्य जैवकीय कारक है लिंग भेद बुद्धि स्वभाव संवेग मूल प्रवृत्तियाँ स्वाभाविक प्रवृत्तियाँ तथा विशिष्ट अभियोग्यताएं। लड़के एवं लड़कियों में लिंग भेद के कारण व्यक्तित्व के गुणों में अन्तर पाया जाता है। बुद्धि जन्मजात होती है। विभिन्न बुद्धि के स्तर के लोग जैसे प्रतिभावान सामान्य या जड़मति व्यक्तित्व की दृष्टि से भिन्न होते हैं।

(ख.) पर्यावरण संबंधी निर्धारक

व्यक्तित्व विकास पर पर्यावरण के प्रभाव को मनोवैज्ञानिक अनेक अध्ययनों के आधार पर सिद्ध कर चुके हैं। व्यक्तित्व के पर्यावरण सम्बन्धी निर्धारक मुख्यतः तीन प्रकार के माने जाते हैं.

1. प्राकृतिक पर्यावरण
2. सामाजिक पर्यावरण
3. सांस्कृतिक पर्यावरण

1. प्राकृतिक पर्यावरण– अन्य प्राणियों के समान ही व्यक्ति भी अपने प्राकृतिक पर्यावरण की उपज है। किसी स्थान की स्थिति भूरचना, जलवायु ,प्राकृतिक ,संसाधनों आदि का प्रभाव व्यक्ति के शारीरिक गठन रंग प्रकृति आदत और उद्यम पर निश्चित रूप से पड़ता है। पर्वतीय पठारी है मैदानी तथा समुद्र के आसपास रहने वालों का शारीरिक गठन तथा रहन-सहन एवं एक दूसरे से सर्वथा भिन्न होता

हैचीनियों का ठिगना कद अंग्रेजों का श्वेत वर्ण पंजाबियों का बलिष्ठ शरीर आदिवासियों का संकुचिततथा जीवन दक्षिण भारतीयों का कृष्ण वर्ण प्राकृतिक पर्यावरण की देन है। ठंडे देशों के लोगों में गर्म देशों में रहने वाले लोगों की अपेक्षा परिश्रम और कार्यक्षमता की मात्रा अधिक होती है।

2. सामाजिक पर्यावरण– सामाजिक प्राणी होने के कारण व्यक्ति का समाज से अछिन्न सम्बन्ध है। विद्वानों के अनुसार जननिक वंशानुक्रमण से कहीं अधिक महत्व व्यक्ति के सामाजिकता का है। बालक के सामाजिक व्यक्तित्व का निर्माण उससमाज के ही भीतर होता है जिसमें वह रहता है। सामाजिक पर्यावरण का क्षेत्र काफी विस्तृत है। इसके अन्तर्गत निम्नलिखित कारक विशेष महत्व रखते हैं

(क) घर– बालक के व्यक्तित्व की आधारशीला का आधार उसका वह घर व परिवार होता है जिसमें वह जन्म लेता है। घर में बालक के साथ पिता और अन्य बड़े लोगों का व्यवहार बालक के व्यक्तित्व विकास पर काफी प्रभाव डालती है। माता पिता द्वारा बालक को मिलने वाला वांछित स्नेह निर्देशन सही प्रशिक्षण स्वस्थ विचार सही आदते और रूचि प्रतिमानों को विकसित करता है।

(ख) पास–पड़ोस विद्यालय जाने से पूर्व वर्षों में बच्चे का समय घर और पड़ोस में ही व्यतीत होता है। इस समय यह अधिक महत्व रखता है कि बच्चा किस प्रकार के बच्चों के साथ खेलता है किन परिवारों में आता जाता है और कौन लोग उसके साथ कैसा व्यवहार करते हैं। इन सभी का सम्मिलित प्रभाव बालक के व्यक्तित्व विकास पर पड़ता है बालक का सभ्य परिवारों के बच्चों के साथ ही मिलना जुलना उसमें आत्मगौरव , आत्मविश्वास , सामाजिकता, मित्रता तथा मिलनशीलताआदि अनेक गुणों का विकास होता है।

(ग) विद्यालय– व्यक्तित्व विकास के पर्यावरण सम्बन्धी निर्धारकों में घर के बाद सर्वाधिक महत्वपूर्ण कारक विद्यालय है। विद्यालय को समाज का लघु रूप माना जाता है। किसी भी देश के भविष्य का निर्माण विद्यालयों से ही होता है।व्यक्तित्व निर्माण की प्रक्रिया इस बात पर भी निर्भर करती है कि अधिक से अधिक अधिगम करके छात्र अपने व्यक्तित्व का सर्वतोमुखी विकास की सीमा तक कर पाते हैं कोठारी कमीशन ने अपनी रिपोर्ट शिक्षा एवं राष्ट्रीय विकास में विद्यालय के महत्व को स्वीकार करते हुए कहा है भारत के भाग्य का निर्माण उसकी कक्षाओं में हो रहा है

(घ) मंनोरंजन के साधन मनोरंजन के साधनों का प्रभाव भी बालक के व्यक्तित्व विकास पर पड़ता है। मनोरंजन के साधनों की आवश्यकता उस समय होती है जब बालक के समक्ष खाली समय व्यतीत करने की समस्या होती है। विद्यालय में पाठ्य सहगामी क्रियाओं के अतिरिक्त रेडियो, दूरदर्शन तथा चलचित्र आदि के द्वारा बालकों के व्यक्तित्व विकास में काफी सहायता मिलती है। प्रेरणादायी कार्यक्रम अतिशीघ्र बालकों के व्यक्तित्व पर सार्थकप्रभाव डालते हैं।

(3) मनोवैज्ञानिक कारक–

1. घर से लेकर विद्यालय तक विस्तृत समाज में कुछ ऐसे कारक होते हैं। जो बालक के व्यक्तित्व पर मनोवैज्ञानिक ढंग से प्रभाव डालते हैं। उदाहरणस्वरूप– जिन बालकों को घर व विद्यालय में उनके अच्छे कार्यों के लिए पुरस्कृत और प्रशंसित किया है जाता है तथा गलत एवं अनुचित कार्यों के

लिए आवश्यक निर्देशन दिया जाता है उनमें व्यक्तित्व के धनात्मक गुणों का विकास होता है उसके विपरीत जिन्हें बराबर दण्डित और निन्दा का ही पात्र समझा जाता है उनका व्यक्तित्व भावनात्मक ग्रन्थियों का शिकार हो जाता है। इन कारकों को मनोवैज्ञानिक कारक कह सकते हैं। इनमें मुख्य हैं

- प्रशंसा एवं निन्दा
- सहयोग और संघर्ष
- आत्मसम्मान एवं आत्मदैन्य
- समायोजन एवं आत्मसात
- पुरस्कार एवं दण्ड
- स्थायी भाव एवं आदर्श निर्माण।

3. सांस्कृतिक पर्यावरण

इस समय संस्कृति एवं व्यक्तित्व के अध्ययन पर विशेष बल दिया जा रहा है क्योंकि व्यक्तित्व सांस्कृतिक कारकों से भी प्रभावित होता है। आजकल अधिकतर मनोवैज्ञानिक भी यह मानने लगे है कि संस्कृति एवं व्यक्तित्व दो भिन्न वस्तुएं न होकर एक हैं। व्यक्तित्व और संस्कृति के सम्बन्ध का ज्ञान हमें व्यक्ति के व्यवहारों एवम आदतों द्वारा सरलता से होता है।

किसी भी देश में संस्कृति में कुछ ऐसे तत्व की प्रधानता होती है जिन्हें उस देश के नागरिकों में पहचानाजा सकता है। संस्कृतियों के विभिन्नता के कारण ही व्यक्तित्व विभिन्न प्रकार के होते हैं। इसलिए जापान की संस्कृति में जापानी और भारत की संस्कृति में भारतीय व्यक्तित्व का विकास होता है।

निष्कर्ष

व्यक्तित्व विकास की प्रकिया को अनेक तत्व प्रभावित करते हैं, कुछ निर्धारक व्यक्तित्व की धुरी अर्थात् 'आत्म–प्रत्यय' को प्रभावित करते हैं तो कुछ कारक शीलगुणों को, परन्तु कोई भी कारक व्यक्तित्व के किसी एक ही पक्ष को प्रभावित नहीं करता अपितु सम्पूर्ण व्यक्तित्व इससे प्रभावित होता है कौन से कारकों का प्रभाव अधिक होगा यह इस पर निर्भर करता है कि बच्चे में उस कारक के प्रभाव को समझने की योग्यता कितनी है? जैसे–किसी खूबसूरत बच्चे को यदि समझ है की लोग उसकी प्रसंशा करते हैं तो उसके व्यक्तित्व पर इसका धनात्मक प्रभाव पड़ेगा

संदर्भ सूची

- ल्योंस, शेरी एल. (2009)। प्रजाति, सर्प, आत्मा और खोपड़ी विक्टोरियन युग में हाशिये पर विज्ञान। अल्बानी न्यूयॉर्क प्रेस।
- नौर्ट पीएचडी, आर. (2010)। चेहरे के भाव भावनाओं को नियंत्रित करते हैं। साइक सेंट्रल
- स्टीन, एच. टी. (नो–डेट) बच्चों पर पेरेंटिंग शैलियों का प्रभाव, अल्फ्रेड एडलर संस्थान।
- नरसिंह, आर., (2008), आयरनकीकमीवालेएनीमियापरअध्ययन, इंडस्ट्रीज़।
- तेतेजाजीएस, सिंहपी. (2010), माइक्रोन्यूट्रिएंटप्रोफाइलइनइंडियनपॉपुलेशन (पार्ट I) नईदिल्ली।
- श्री वास्तव, डी. एन.(2010) मनोवैज्ञानिक प्रतिक्रियाएं, अग्रवाल प्रकाशन,आगरा 297
- सिंह, अरुण कुमार (2006) शिक्षा मनोविज्ञान, चतुर्थ संस्करण, नई दिल्ली भारती भवन पब्लिकेशंस एंड डिस्ट्रीब्यूशन
- मानव ,आर.एन (2008) उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, द्वितीय संस्करण ,मेरठ ,आर.लाल पब्लिकेशन मेरठ